

हरिकथामृतसार
कल्पसाधन संधि

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणधिम्धापनिथु पेळुवे
परम भगवधभक्थरिधनाधरधि केळुवुधु

ऐकविंशति मत प्रवतक
काकुमाय्गळ कुहकयुक्ति नि
राकरिसि सवोत्तमनु हरियेंदु स्थापिसिद
श्रीकळत्रन सदन द्विजप पि
नाकि सन्नतमहिम परम कृ
पाकटाआदि नोडु मध्वाचाय गुरुवय २३-०१

वेध मोदलागिप्पमल मो
आधिकारिगळाद जीवर
साधनगळ परोअनंतर लिंगभंगवनु
साधुगळु चित्तयिपुदेन्नप
राधगळ नोडदले चक्र ग
दाधरनु पेळिसिद तेरदंददलि पेळुवेनु २३-०२

थृण क्रिमि द्विज पशु नरोत्तम
जनप नरगंधव गणरिव
रेनिपरम्शविहीन कमसुयोगिगळु एंदु
तनु प्रतीकदि बिंबन उपा
सनव गैयुत इंद्रियज क
मनवरत हरिगपिसुत निममरु एनिसुवरु २३-०३

ऐलु विध जीवगण बहळ सु
राळि संख्यानेमवुळळदु
ताळि नरदेहवनु ब्राह्मणकुलधलवतरिसि
स्थूलकमव तोरेदु गुरुगळु

पेळिदथव तिळिदु तत
त्कालधम समपिसुवरु कमयोगिगळु २३-०४

हीन कमगळिंद बहुविध
योनियलि संचरिसि प्रांतके
मानुषत्वनैदि सवोत्तमनु हरियेंदु
ज्झन्यानभक्तिगळिंद वैदो
क्तानुसार सहस्र जनुम
न्यून कमव माडि हरिगपिसिद नंतरदि २३-०५

हतु जनुमगळलि हरि स
वोत्तम्म सुरासुरगणाचित
चित्रकम विशोकनंतानंतरूपात्म
सत्यसंकल्प जगदु
त्पत्ति स्थिति लय कारण जरा
मृथ्युवजितनेंदुपासनेगैद तरुवाय २३-०६

मूरु जनुमगळलि देहा
गार पशु धनपत्तिमित्रकु
मार मातापितृगळलिह स्नेहदिंदधिक
मारमणनलि बिडदे माडुव
सूरिगळु ई उक्तजनुमव
मीरि परमात्मन स्वदेहदि नोडि
सुखिसुवरु २३-०७

देवगायकजान चिरपितृ
देवरेल्लरु ज्झन्यानयोगिग
ळावकालकु पुष्कर शनैश्वर उषा स्वाहा
देवि बुध सनकादिगळु मे
घावळी पपजन्य सांशरु
ई उभयगणदोळगिवरु विज~नान योगिगळु २३-०८

भरथखम्दधि नूरु जन्मव ढरिसि निष्कामक
सुकमा चरिसिधानमथरधि धशसाहस्र जन्मधलि
उरुथरज्झन्यानवनु पदेधै धारुधशधेहधलि
भक्थिय निरवढिकनलि मादि काम्बरु बिम्बरूपवनु २३-९

साढनाथपवधलि इवरिगनाधिकालपरोक्षविल्ल
निषेढकमगळिल्ल नरकप्राप्थि मोधलिल्ल
वेधशास्त्रगळिल्लि इप्प विरोढवाक्यव परिहरिसि मढु
सूधनने सवोथथमोथथमनेम्धु सुखिसुवरु २३-१०

सत्यलोकाधिपन विडिदु श
तस्थ देवगणांतरेल्लुरु
भक्तियोगिगळेंदु करेसुवराव कालदलि
भक्तियोग्यर मध्यदलि स
द्धक्तिविज्झन्यानदि गुणदिं
दुत्तमोत्तम ब्रह्म वायु वाणि वाग्देवि २३-११

ऋजुगणके भक्थ्याधिगुण साहजवेनिसुवुवु क्रमधि
वृध्ढ्याब्जज पधविपयमथ बिम्बोपासनवु अढिक
वृजिनवजिथरिवरोळगे थ्रिगुणज विकारगळिल्लवेम्धिगु
ध्विजफणिपमृदशक्रमोधलाधवरोळिरुथिहवु २३-१२

साधनात्पूवदलि ई ऋ
ज्वादि तात्त्विकरेनिप सुरगण
नादि सामान्यापरोइगळेंदु करेसुवरु
साधनोत्तर स्वस्थ बिंब उ
पाधिरहितादित्यनंददि
सादरदि नौडुवरु अधिकारानुसारदलि २३-१३

चिन्नभक्तरु एनिसुतिहरु सु

पण शैषाद्यमररेल्ला
च्छिन्नभकुतरु नाल्वरेनिपरु भारती प्राण
सोन्नोडल वाग्देवियरु फणे
गण्ण मोदलादवरोळगे त
तन्नियामकरागि व्यापारवने माडुवरु २३-१४

हीन सत्कमगळेरडु पव
मानदेवनु माळपनिदकनु
मानविल्लेदेनुत दृढभक्तियलि भजिपगे
प्राणपति संप्रीतनागि कु
योनिगळ कोडनेल्ल कमग
ळाने माडुवेनेंब मनुजर नरककैदिसुव २३-१५

देव ऋषि पितृ नृप नररे नि
पैवरोळु नेलिसिद्दु अवर स्व
भाव कमव माडि माडिप ओंदु रूपदलि
भाविब्रह्मनु कूमरूपद
ली विरिंचांडवनु बेन्नलि
ता वहिसि लोकगळ पोरेवनु द्वितीय रूपदलि २३-१६

गुप्तनागिद्विनिलदेव द्वि
सप्तलोकद जीवरोळगे त्रि
सप्तसाविरदारुनूरु श्वासजपगळनु
सुप्तस्वप्नदि जाग्रतेगळ
लाप्तनंददि माडिमाडिसि
क्लुप्तभोगगळीव प्रांतके तृतीयरूपदलि २३-१७

शुद्ध सत्वात्मक शरीरदोळ
इद्द कालकु लिंगदेहवु
बद्धवागदु दग्धपटदोपादि
इरुतिहुदु सिद्धसाधन सवरोळगन

वद्यनेनिसुव गरुड शेष क
पदिमोदलादमररेल्लरु दासरेनिसुवरु २३-१८

गणदोळगे तानिहु ऋजुवें
देनिसिकोंबनु कल्पशत सा
धनवगैदानंतरदि ता कल्कियेनिसुवनु
द्विनवशीतिय प्रांत भागदि
अनिल हनुमद्रीम रूपदि
दनुजरेल्लर सदेदु मध्वाचायरेनिसिदनु २३-१९

विश्वव्यापक हरिगे ता सा
दृश्यरुपव धरिसि ब्रह्म स
रस्वति भारतिगलिंदोडगूडि पवमान
शाश्वत सुभक्तियलि सुज्झन्यान
स्वरूपन रूप गुणगळ
नश्वरवु एंदेनुत पोगळुव श्रुतिगळोळगिहु २३-२०

खेट कुक्कुट जलटवेंब त्रि
कोटिरूपव धरिसि सतत नि
शाटरन संहरिसि सलहुव सकल सज्जनर
कैटभारिय पुरद प्रथमक
वाटवेनिसुव गरुद शेष ल
लाटलोचन मुख्यसुररिगे आव कालदलि २३-२१

ई ऋजुगळोळगोब्ब साधन
नूरु कल्पदि माडि करेसुव
चारुतर मंगळसुनामदि कल्पकल्पदलि
सूरिगळु संतुतिसि वंदिसे
घोरदुरितगळळिदु पौपुवु
मारमण संप्रीतनागुव सवकालदलि २३-२२

पाहि कल्कि सुतेजदासने
पाहि धमाधमखंडने
पाहि वचस्वी खषण नमो साधु महिपतिये
पाहि सद्धमज्झन्य धमज
पाहि संपूण शुचि वैकृत
पाहि अंजन सषपने खपट श्रधाह्व २३-२३

पाहि संध्यात विज्झन्यानने
पाहि महविज्झन्यान कीतन
पाहि सम्कीणाख्य कस्थने महा बुद्ध जया
पाहि सुमहत्तर सुईयने
पाहि मां मेधावि विजय जय २३-२४

पाहि मौद प्रमौद संतस
पाहि आनंद संतुष्टने
पाहि माम चावांग चारु सुबाहु चारुपद
पाहि पाहि सुलोचनने मां
पाहि सारस्वत सुमीरने
पाहि प्राज्झन्यने कपीयलंपट पाहि सवज~न २३-२५

पाहि मां सवजेत मित्रने
पाहि पापविनाशकने मां
पाहि धमविनेत शारद ओज सुतपस्वी
पाहि मां तेजस्वि नमो मां
पाहि दानशीलने सुशीलने
पाहि यज्झन्यसुकत यज्वे यागवतकने २३-२६

पाहि प्राण त्राण अमषि
पाहि मां उपदेष्ट मारक
पाहि कालक्रीडन सुकता सुकालज्झन्य

पाहि कालसुसूचकने मां
पाहि कलिहत कलि मां
पाहि काल श्यमरेत सदारत सुबलने २३-२७

पाहि पाहि सहो सदाकपि
पाहि गम्यज्झन्यानदशकुल
पाहि मां श्रोतव्य नमो संकीतव्य नमो
पाहि मां मंतव्य कव्यने
पाहि मां ध्रष्टव्य सख्यने
पाहि मां गंतव्य क्रव्यने पाहि स्मतव्य २३-२८

पाहि सेव्य सुभव्य नमो मां
पाहि स्वगव्य नमो भाव्यने
पाहि मां ज्झन्यातव्य नमो वक्तव्य गव्य नमो
पाहि मां लात्व्य वायुवे
पाहि ब्रह्म ब्राह्मणप्रिय
पाहि पाहि सरस्वतीपते जगद्गुरुवय २३-२९

वामनपुराणदलि पेळिद
ई महात्तर परममंगळ
नामगळ संप्रीतिपूर्वक नित्य स्मरिसुवरु
श्रीमनोरमनवरु बैडिद
कामिताथगळित्तु तन्न त्रि
धामदोळगनुदिनदलिट्टानंदपडिसुवनु २३-३०

ई समीरगे नूरु जनुम म
हासुख प्रारब्धभोग प्र
यासविल्लदलैदिदनु लोकाधिपद्यवनु
भूसुरन ओप्पिडियवलिगे वि
शेष सौख्यवनित्त दातन
दासवयनु लोकपतियेनिसुवुदु अच्चरिवे २३-३१

द्विशतकल्पगळ्ळि बिडदी
पेसरिनिंदलि करेसिदनु त
त्रोशदमररोळ्ळिगिट्टु माडुवनवर साधनव
असदुपासनेगैव कल्या
घसुर पर संहरिसि ता पों
बसिरपदवैदुवनु गुरुपवमान सतियोडने २३-३२

अनिमिषर नामदलि करेसुव
अनिलदेवनु ओंदु कल्पदि
वनजसंभवेनेनिसि एंभतेळुवरे वरुष
गुणत्रयविवजितन मंगळ
गुणक्रिय सुरूपगळुपा
सनवु अव्यक्तादि पृथ्व्यंतरदि इरुतिहुदु २३-३३

महित ऋजुगुणकोदे परमो
त्सह विवजितवेंब दोषवु
विहितवे सरि इदनु पेळदे मुक्तब्रह्मरिगे
बहुदु साम्य ज्झन्यान भकुतियु
द्रुहिणपद परियंत वृद्धियु
बहिरुपासनेयुंटनंतर बिंब दरहनवु २३-३४

ज्झन्यानरहित भयत्व पेळव पु
राण दैत्यर मोहकवु चतु
राननगे कोडुवुदे मोहाज्झन्यान भय शोक
भानुमंडल चलिमुदंददि
काणुवुदु दृग्दोष दिंदलि
श्रीनिवासन प्रीतिगोसुग तोदनल्लदले २३-३५

कमलसंभव सवरोळुगु
तमनेनिसुवनु एल्ल कालदि

विमल भकुति जङ्गन्यान वैराग्यादि गुणगदिंद
समभ्यधिकविवजितन गुण
रमेय मुखदिंदरितु नित्यादि
द्युमणि कोटिगळंते कांबनु बिंबरूपवनु २३-३६

जङ्गन्यानभक्त्याद्यखिळगुण चतु
राननोळगिप्पंते मुख्य
प्राणनलि चिंतिपुदु यत्किंचितु कोरतेयागि
न्यून ऋजुगण जीवरलि क्र
मेण वृद्धि जङ्गन्यान भकुति स
मान भारति वाणिगळलि पदप्रयुक्तधिक २३-३७

सौरि सूयन तेरदि ब्रह्म स
मीर गायत्रि गिरिगळोळु
तौरुवुदु अस्पष्टरूपदि मुक्तिपरियंत
वारिजासन वायुवाणि
भारतिगळिगे महाप्रळयदि
बारदजङ्गन्यानादिदोषवु हरिकृपाबलदि २३-३८

नूरु वरुषा नंतरदलि स
रौरुहासन तन्न कल्पद
लारु मुक्तियनैदुवरो अवरवर करेदोयुदु
शौरिपुरदोळगिप्प नदियलि
कारुणिक सुस्नान निजपरि
वार सहितदि माडि हरियुदर प्रवेशिसुव २३-३९

वासुदेवन उदरदलि प्र
वेशगैदानंतरदि नि
दोष मुक्तरु उदरदिं पोरमोट्टु हरुष्दलि
ईशनींदाजङ्गन्यव पडेदनं
तासन श्वेतद्वीप मौअदिं

वासवागि विमुक्तदुःखरु संचरिसुतिहरु २३-४०

सत्वसत्व महासुसूमवु
सत्वसत्वात्मक कळेर
सत्य लोकाधिपनेनिपगत्यल्पवेरडु गुण
मुक्ति योग्यविदल्लजांडो
त्पत्ति कारणवल्ल हरिप्री
त्यथवागि जगद्व्यापारगळ माडुवनु २३-४१

पादन्यून शताब्ध परियं
तोदि उग्रतपाह्वयदि लव
णोदधियोळगे कल्पदश तपविद्दन्तरदि
साधिसिद महदेव पदवा
रैदुनव कल्पावसानके
ऐदुवनु ता शेषपदव पावतीसहितनागि २३-४२

इंद्रमनु दशकल्पगळलि सु
नंदनामदि श्रवणगैदु मु
कुंदनपरोआथ नाल्कु सुकल्प तपविद्दु
नौदु पोगेयोळु कोटि वरुष पु
रंदरनु अदनुंडनंतर
पोदिदनु निजलोक सुरपति कामनिदरंते २३-४३

करेसुवरु पूवदलि चंद्रा
क रतिशांत सुरूपनामदि
एरडेरडु मनुकल्प श्रवणव गैदु मनुकल्प
वरतपोबलदिदलवाक
शिरगळागी रैदुसाविर
वरुष दुःखव नीगि कांबरु बिबरूपवनु २३-४४

साधनगळपरोआनंतर

ऐदुवरु मोअवनु शिव श
क्रादि दिविजरु उक्तक्रमदिं कल्पसंख्येयलि
ऐदलेयगैवतु उपेंद्र स
हौदरनिगिप्पतु द्वीनव त्व
गाधिपति प्राणनिगे गुरुमनुगळिगे षोडशवु २३-४५

प्रवहमरुतगे हन्नेरडु सैं
धव दिवाकर धमारिगे दश
नवसुकल्पवु मित्ररिगे शेषशतजनरिगेंटु
कवि सनक सुसनंदन सन
त्कुवर मुनिगळिगोळु वरुणन
युवति पजन्यादि पुष्करगारु कल्पदलि २३-४६

ऐदु कमज सुररिगाजा
नादिगळिगीरेरडु कल्पा
धाधिकत्रय गोपिकास्त्रीयरिगे पितृ त्रयवु
ई दिवौकस मनुज गायक
रैदुवरु एरडौदु कल्प न
राधिपरिगरेकल्पदोळगपरोअविरुतिहुदु २३-४७

दिपगळननुसरिसि दीप्तियु
व्यापिसि महातिमिर कळैदु प
रोपकारव माळप तेरदंददलि परमात्मा
आ पयोजासनरोळिहु स्व
रूप शक्तिय व्यक्तगैसुत
ता पोळेवनवरंते चेषेय माडि माडिसुत २३-४८

स्वोदरस्थित प्राण ऋद्रें
द्रादि सुररिगे देहगळ को
ट्टादरदलवरवर सैवेय कोंबननवरत
मौद बोध दयाब्धि तन्नव

राधिरोगव कळेदु महदप
राधगळ नौडदेले सलुहुव सतत स्मरिसुवर २३-४९

प्रति प्रती कल्पदलि सृष्टि
स्थिति लयव माडुतले मोदिप
चतुरमुख पवमानरन्नव माडि भुंजिसुव
घृतवे मृत्युंजयनेनिप दे
वतेगळे उपसेचनरु श्री
पतिगे मूजगवेल्लवोदनतिथियेनिसिकोंब २३-५०

गभणी स्त्री उंड भोजन
गभगत शिशु उंब तेरदलि
निभयनु तानुंडुणिसुवनु सवजीवरिगे
निबलतिपरमाणु जीवगे
अब्बुवदे स्थूलान्नभोजन
अभकरु पेळुवरु कोविदरिदनोडंबडरु २३-५१

अपचयगळिल्लुंडुददरि
दुपचयगळिल्लुमरगणदोळ
गुपमरेनिसुवरिल्लु जनुमादिगळु मोदलिल्लु
अपरिमितसन्महिम नरहरि
अपुनरावतरन माडुव
कृपणवत्सल स्वपदसौख्यवनित्तु शरणरिगे २३-५२

बित्ति बीजव भूमियोळु नी
रेत्ति बेळेसिद बेळसु प्रांतके
कित्ति मेलुवंददलि लकुमीरमण लोकगळ
मते जीवर कम कालो
त्पत्ति स्थिति लय माडुतलि सम
वतियेनिसुव खेद मोदगळिल्लुदनवरत २३-५३

श्वसनरुद्रेंद्र प्रमुख सुम
नसरोळिद्दरु उत्पिपासेग
ळोशदोळिप्पुवु सकल भोगके साधनगळागि
असुर प्रेत पिशाचिगळ बा
धिसुतलिप्पुवु दिनदि मा
निसरोळगे मृगपइ जीवरोळिद्दु पोगुवुवु २३-५४

वासुदेवगे स्वप्न सुषुप्ति पि
पासे उधे भय शोक मोहा
यास विस्मृति मात्सय मद पुण्य पापादि
दोषवजितनेदु ब्रह्म स
दाशिवादि समस्त दिविजरु
पासनेय गैदेळ्ळ कालदि मुक्तरागिहरु २३-५५

परमसूम अणवैदु तृटि
करेसुवदु ऐवत्तु त्रुटि लव
एरडु लववु निमेष निमेषगळेंटु मात्र युग
गुरु दश प्राणावु पळवु ह
नेरडु बाणवु घळिगे त्रिंशति
इरुळु हगलरवत्तु घटिगळहौरात्रिगळु २३-५६

ऐ धिवा राथिगळेरेदु हधिनैधु पक्षगळेरेदु मासग
ळाधपुवु मासध्वयवे ऋथु ऋथुश्रयगळयन
ऐधुवुधु अयनध्वयाब्ध कृथाधियुगगळु
धेवमानधि ध्वाधशसहस्रवरुषगळहवधनु पैळुवेनु २३-५७

चथुस्साविरधेम्तुनूरिवु कृथयुगके थिसहस्र
सले षत शथवु श्रैथेगे ध्वारगे ध्विसहस्रनानूरु
धिथिजपथि कलियुगके साविर शथगळध्वय कूदि
ई धेवथेगळिगे हनेरेदु साविरवहवु वरुषगळु २३-५८

प्रथम युगकेळधिकवरे विं
शति सुलआष्टोतरशत विं
शतिसहस्र मनुष्य मानब्दगळु षण्णवति
मित सहस्रद लअद्वादश
द्वितिय तृतियके एंटुलअद
चतुःषष्टि सहस्र कलिगिदरध चिंतिपुदु २३-५९

मूरधिकनाल्वतुलअद
लारु मूररडधिक साविर
ईररडु युग वरुष संख्येय गैयलेनितहुदु
सूरिपेच्चिसे साविरद ना
न्नूरु मूवत्तेरडुकोटि स
रौरुहासनगिदु दिवसवेंबरु विपश्चितरु २३-६०

शतधृतिगे ई दिवसगळु त्रिं
शतियु मासद्वादशाब्दवु
शतवेरडरोळु सवजीवोत्पत्तिस्थितिलयवु
श्रुतिस्मृतिगळु पेळुतिहव
च्युतगे निमिषविदैदु सुखशा
श्वतगे पासटियेंबरे ब्रह्मादि दिविजरनु २३-६१

आधिमढ्यमथगळु इल्लध माढवगिधुपचार
वेम्यु ऋगाधिवेधपुराणगळु पेळुवुवु निथ्यधलि
मोधमयनानुग्रहव सम्पाधिसि रमाब्रःमरुधेम
ध्राधिगळु थम्यम्म पधवियनैधि सुखिसुवरु २३-६२

ई कथामृतपानसुख सुवि
वैकिगळिगळुदले वैषिक
व्याकुल कुचित्तरिगे दोरेवुदे आव कालदलि
लोकवातेय बिट्टु इदनव
लौकिसुत मोदिपरिगोलिदु कृ

पाकर जगन्नाथविठल काय्व करुणदलि २३-६३

www.yousigma.com